IOSR Journal of Business and Management (IOSR-JBM)
e-ISSN: 2278-487X, p-ISSN: 2319-7668. Volume 22, Issue 6. Ser. IX (June. 2020), PP 41-51
www.iosrjournals.org

रांची जगन्नाथ मंदिर – ऐतिहासिक अवलोकन

Dr. Kr. A.N. Shahdeo H.O.D
Department of Commerce & Business Studies
Marwari Collage, Ranchi.
&
Shweta Shahdeo, Research Scholar
Dept. of Commerce and Business Management,

Ranchi University, Ranchi

सार ABSTRACT

झारखंड अपनी नैसर्गिक सुंदरता और धार्मिक स्थलों के कारण एक अलग महत्व रखता है। झारखंड को मंदिरों का राज्य कहना गलत नहीं होगा। झारखंड वन जीवन, जनजातीय समुदाय, सांस्कृतिक विविधता और प्राकृतिक सुंदरता से श्रृंगृत राज्य है वीरों की इस भूमि को किसी परिचय की आवश्यकता नहीं । यूं तो संपूर्ण झारखंड धार्मिक पर्यटन क्षेत्र से घिरा है जो अपनी विविधताओं, धर्म, प्राकृतिक सुंदरता के लिए विश्व प्रसिद्ध है। उनमें से एक रांची का जगन्नाथ मंदिर ना केवल अपनी खूबसूरती के लिए जाना जाता है बल्कि प्रकृति की गोद में स्थित यह मंदिर अपने अंदर एक दौर की विरासत, वीरता, साहस को संयोजित किए हुए हैं। बहुत कम लोग ही इन तथ्यों से परिचित हैं। इस अनुसंधान पत्र के माध्यम से संपूर्ण संक्षिप्त जानकारी प्रदान की जा रही है। जगन्नाथ मंदिर रांची से दक्षिण पश्चिम में 10 किलोमीटर दूर बड़कागढ़ क्षेत्र में 250 फीट ऊंची पहाड़ी पर स्थित है। सन् 1691 में श्री मंदिर का निर्माण ठाकुर एनीनाथ शाहदेव ने करवाया था। मंदिर की ऐतिहासिक परिदृश्य, अपनी पारंपरिक पूजन विधि, संप्रदायिक सौहार्द, गौरवपूर्ण विरासत से संबंध, मेले व्यवसायिक गतिविधि, रोजगार, भोग के अनूठे नियम इत्यादि अनेक विषयों से अवगत कराया गया है।

Date of Submission: 08-06-2020 Date of Acceptance: 25-06-2020

परिचय

झारखंड की विरासत, यहां की संस्कृति पूरे राज्य की पहचान है। धार्मिक रीति–रिवाजों, देवी–देवताओं, सुंदर धार्मिक पर्यटन स्थलों, प्रकृति के मनोरम दृश्य, मनमोहक वादियों, वीरों की गाथाओं, सांस्कृतिक रीति–रिवाजों, आदिवासी परंपराओं, और शौर्य और बलिदान की भूमि के रूप में अपनी पहचान को जगजाहिर करती है। धार्मिक पर्यटन स्थल असीम श्रद्धा एवं विश्वास के कारण ही चारों धाम हमारी विविधताओं को एकता के सूत्र में सदैव जोड़ते रहे हैं। धार्मिक स्थल लोक मान्यताओं तथा लोक कथाओं की अपनी विरासत के माध्यम से लोगों को जोड़ता

है। वनों–पहाड़ों से परिपूर्ण झारखंड अपनी ऐतिहासिक एवं अलौकिक गाथाओं, सनातनी परंपराओं और धार्मिक आस्थाओं का पावन स्थल रहा है। प्राकृतिक सुंदरता से लृप्त आस्था तथा विश्वास से परिपूर्ण रांची का जगन्नाथ मंदिर रांची से दक्षिण–पश्चिम 10 किलोमीटर दूर बड़कागढ़ क्षेत्र में 250 फीट ऊंची पहाड़ी पर विराजमान है। 1691 में श्री जगन्नाथ मंदिर का निर्माण ठाकुर एनीनाथ शाहदेव ने करवाया था।

ऐतिहासिक परिदृश्य

छोटानागपुर महाराज राम शाहदेव के चौथे पुत्र, बड़कागढ़ राज्य के राजा हुए, इनका नाम ठाकुर एनीनाथ शाहदेव था। इन्होंने सन् 1691 में श्री जगन्नाथ मंदिर का निर्माण अपने बड़कागढ़ राज्य में करवाया। इनके पिता छोटानागपुर के 49 वें महाराज हुए। ठाकुर एनीनाथ शाहदेव के तीन भाई जो उनसे बड़े थे, उन्होंने तीर्थाटन पर जाने का निर्णय लिया तथा तीनों भाइयों के निर्णय उपरांत राज्य का भार सबसे छोटे भाई ठाकुर एनीनाथ शाहदेव को सौंप दिया और निश्चिंत होकर तीर्थाटन के लिए प्रस्थान किया। छोटानागपुर का राजभार ठाकुर एनीनाथ शाहदेव के जिम्मे था। वे पूर्ण निष्ठा तथा न्याय के साथ कुशलता पूर्ण संपूर्ण दायित्व का निर्वहन करने लगे।

श्री जगन्नाथ मंदिर (पहले)

ठाकुर एनीनाथ शाहदेव श्री जगन्नाथ प्रभु के बहुत बड़े भक्त थे। वे उनकी श्रद्धा में लीन रहते थे। अपने शासनकाल के दौरान ही उन्होंने पूरी (उड़ीसा) के जगन्नाथ मंदिर जाने का निश्चय किया तथा अपने एक सेवक (हुंडरू के उरांव) को साथ ले गए। राजा की तरह सेवक भी जगन्नाथ प्रभु की आस्था में अन्न जल छोड़कर उपासना में लगा रहता था। एक रात्रि जब श्री मंदिर के प्रांगण में ठाकुर एनीनाथ शाहदेव सो रहे थे तब उन्हें स्वप्न में स्वयं भगवान जगन्नाथ ने दर्शन दिया तथा उन्हें अपने क्षेत्र में पूरी जैसा ही एक मंदिर निर्माण का आदेश दिया। दूसरी ओर सेवक उरांव भी जगन्नाथ प्रभु की आस्था में अन्न जल छोड़ चुका था तब श्रीहरि जगन्नाथ सोने के थाल में महाप्रसाद लेकर ब्राह्मण के वेश में उरांव के पास आए और प्रसाद ग्रहण करने को कहा परंतु उरांव ने कहा जब भगवान स्वयं महाप्रसाद देंगे तो मैं ग्रहण करूंगा। उराँव की भक्ति से प्रसन्न श्री जगन्नाथ अपना रूप प्रकट किये। उरांव ने प्रार्थना की और महाप्रसाद ग्रहण किया तथा थाल को अपने सिरहाने छिपा कर रख दिया। प्रातः जब ब्राह्मणों ने सोने की थाल की खोज प्रारंभ किया उसी समय उराँव थाल लेकर स्वयं ही उपस्थित हुआ तथा घटित बातों से उन्हें अवगत कराया। पूरी में उस भक्त की जय जयकार होने लगी ऐसा भक्त जिसे स्वयं महाप्रभु ने भोजन कराया वह धन्य है। इसके उपरांत इस उराँव परिवार के लोग आज भी श्री जगन्नाथ की सेवा में घंटी हर वर्ष श्री मंदिर को प्रदान करते हैं।[प]

ठाकुर एनीनाथ शाहदेव के द्वारा बड़कागढ़ (जगन्नाथपुर धुर्वा) स्थित पहाड़ी पर एक शानदार मंदिर का निर्माण करवाया। यह मंदिर उत्कल पुरी के भगवान जगन्नाथ मंदिर की अनुकृति था। श्री क्षेत्र पुरी के मंदिर के दक्षिण दिशा की ओर समुद्र है। यहां भी समुद्र के प्रतीक के रूप में दक्षिण में महौदधि नाम से एक तालाब का निर्माण करवाया इसी तरह उत्तर दिशा में भी तालाब का निर्माण करवाया जिसे मार्कंडेय और पूर्व दिशा के तालाब को श्वेत गंगा एवं पश्चिम में चंदन तालाब का निर्माण करवाया।

श्री मंदिर के इतिहास के पुराने पन्नों को पलटे तो पाएंगे कि श्री हरि क्षेत्र प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण था। जिस समय श्री मंदिर का निर्माण हुआ था, उस समय निश्चित रूप से यह क्षेत्र प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण रहा होगा। उस समय के सौंदर्य एवं श्री जगन्नाथ मंदिर निर्माण के संबंध में नागवंशी राज कवि बेनी राम ने नागवंशावली में लिखा है

अबत कि तिन्ह के कीर्ति विराजै

जगन्नाथ के मंदिर छाजै

है प्रत्यक्ष लक्ष अमराई

बाग इत्यादि वरणि नहीं जाई ।।56।।

बड़गद्दी बड़कागढ़ माही

चारू चांदनी पक्का आही।

बंशीधर निर्माण महान

है महजूद अजहू मतिमाना ।।57।।

मुगल बादशाह औरंगजेब के शासनकाल में झारखंड में नागवंशी राजाओं तथा उनके परिजनों ने कई मंदिरों का निर्माण कराया। उदयपुर परगना स्थित जगन्नाथपुर बडकागढ़ स्थित जगन्नाथ स्वामी के श्री मंदिर के निर्माण के 9 वर्ष पूर्व संवत् 1939 में ठाकुर एनीनाथ शाहदेव के बड़े भाई राजा रघुनाथ शाहदेव के गुरु हरीनाथ ब्रह्मचारी ने नागवंशी राजा की राजधानी डोइसागढ़ में श्री श्री जगन्नाथ मंदिर का निर्माण करवाया था।

नागवंशी राजाओं ने ही गुमला जिले के कोयल नदी के किनारे नागफेनी में श्री हरि जगन्नाथ स्वामी के मंदिर का निर्माण कराया था। डोईसागढ़ के श्री हरि जगन्नाथ स्वामी जी का मंदिर के दरवाजे पर लिखित अभिलेख इस प्रकार हैं :–

''संवत् ग्रह गुण सिंधु शशी, शुची तृतीया रवि साथ

जगन्नाथ कहं भूपति गुरु हरीनाथ

दूसरा अभिलेख इस प्रकार हैं :–

अंकाग्नि मुनि शुभांशा तृतीयाय शुची शितै

असों कृष्णालय श्री रघुनाथ सद्गुरु।।

एक तीसरा अभिलेख भी था किंतु अब वह मंदिर में नहीं देखा गया। रांची गजेटियर (1917) के अनुसार वह अभिलेख इस प्रकार था :–

"मुनि रख सिंधु शशी समजान कार्तिक शुक्ल रविवार प्रमाण

श्री हरिनाथ देव कृत राज, गोकुलनाथ संग विराज"[षप]

श्री जगन्नाथ मंदिर (अब)

जगन्नाथ मंदिर में झारखंड के दूरदराज के सभी वर्गों के लोग चाहे किसी भी उम्र, जाति, समुदाय के हो अपनी सहभागिता उपस्थित करते रहे हैं। जब यातायात के कोई साधन उपलब्ध नहीं था तब लोग मीलों पैदल बैलगाड़ी से यात्रा करते थे नदी, जंगल झाड़ पार करते हुए प्रभु के दर्शन को एकत्र होते थे। रथ यात्रा जिस प्रकार अभी गुलजार नजर आती है। पूर्व में भी

कोई कम उत्साह ना होता था उस समय भी लोग सुदूर गांव से पैदल घनघोर जंगलों, दुरूह पहाड़ों और वेगवती नदियों को लांधकर रथयात्रा से एक–दो दिन पूर्व मेला स्थल पर पहुंच जाते थे तथा श्री मंदिर के उत्तर दक्षिण में बने सरोवर के किनारे आम्रकुंज की छाया में पड़ाव डाल लिया करते थे। आस्था से सराबोर जगन्नाथ प्रभु के प्रति भक्तों की आस्था कोई शब्दों में बांध नहीं सकता। धन्य है ऐसे श्रद्धालु तथा इनकी आस्था जो वर्तमान काल तक निरंतर नदी की धारा की तरह प्रवाहित होती आ रही है।

गौरवपूर्ण विरासत

अमर शहीद ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव

जब ठाकुर एनीनाथ शाहदेव के तीनो भाई तीर्थाटन कर वापस लौटे, तब उन्होंने उनसे खजाना का ब्यौरा मांगा चुंकि खजाना का एक बड़ा हिस्सा श्री मंदिर के निर्माण में खर्च कर दिया गया था इसलिए खजाने की रकम कम थी। ठाकुर एनीनाथ शाहदेव ने अपने भाइयों को जगन्नाथ श्री मंदिर के संपूर्ण घटनाक्रम से अवगत कराया। भाइयों द्वारा उनके इस पुनीत कार्य से प्रसन्न हो उन्होंने ठाकुर एनीनाथ शाहदेव को बडकागढ़ सहित उदयपुर परगना का श्री तीर्थ श्री मंदिर का स्वामित्व भी सौंप दिया। बडकागढ़ के राजा ठाकुर एनीनाथ शाहदेव के 5 पत्नियों से 21 पुत्र थे। इनके बड़े लड़के ठाकुर रघुनाथ शाहदेव हुए। जिनको कोई संतान नहीं थी इनके छोटे भाई भी निःसंतान ही मृत्यु को प्राप्त हुए। तीसरे भाई जगन्नाथ शाहदेव के 4 पुत्र हुए। बड़े लड़के ठाकुर गोपीनाथ शाहदेव निःसन्तान ही मृत्यु को प्राप्त हुए। उसके उपरांत ठाकुर जयनाथ शाहदेव राजा बनाए गए। बाद में इनके बड़े लड़के ठाकुर नयननाथ शाहदेव राजा हुए। ठाकुर नयननाथ शाहदेव के दो बेटे हुए।

बड़े लड़के ठाकुर रघुनाथ शाहदेव के बड़े लड़के ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव हुए जिन्होंने प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में झारखंड का नेतृत्व किया था जिसका परिणाम हुआ कि 16 अप्रैल 1858 को रांची जिला स्कूल के मुख्य द्वार के समक्ष फांसी दे दिया गया साथ ही बडकागढ़ राज्य के 91 गांव जप्त कर लिया गया और हटिया स्थित राज प्रसाद (किला) को तोप से मारकर ध्वस्त कर दिया।[ppp] ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव की धर्मपत्नी बानेश्वरी कुंवर ने हार नहीं मानी और अपने पति की एकमात्र निशानी अपने पुत्र ठाकुर कपिलनाथ शाहदेव को लेकर गुमला की पहाड़ियों के तरफ एक ग्राम खोरहा में डेरा जमाया। जिसकी जानकारी कुछ ही लोगों को थी। ठाकुरानी बानेश्वरी कुंवर इस दौरान खोरहा ग्राम में लगभग 12 वर्षों तक अंग्रेजों की नजर से छिपी रही। जब ठाकुर कपिलनाथ शाहदेव कुछ बड़े हुए तब ठाकुरानी बानेश्वरी कुवंर ने कोलकाता उच्च न्यायालय में 1872 में बड़कागढ़. इस्टेट लौटाने के लिए एक याचिका दायर की किंतु माननीय उच्च न्यायालय ने बड़कागढ़ इस्टेट लौटाने के उनके आग्रह को ठुकरा दिया। माननीय उच्च न्यायालय से आग्रह किया गया था कि बड़कागढ़ ईस्टेट का उत्तराधिकारी ठाकुर कपिलनाथ शाहदेव जीवित है इसलिए अंग्रेज सरकार द्वारा जप्त की गई उसके पिता की संपत्ति को लौटा दिया जाए। न्यायालय द्वारा आवेदन खारिज कर दिया गया। न्यायालय द्वारा कहा गया कि चूँकि ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव ने अंग्रेजी सरकार के खिलाफ बगावत की थी इसलिए उनकी चल–अचल संपत्ति को वापस नहीं किया जाएगा। ठाकुरानी बानेश्वरी कुवंर ने जगन्नाथ की शरण में रहने का निश्चय किया। न्यायालय के द्वारा जीवन यापन के लिए ₹30 माहवारी राजनीति पेंशन(जो बड़कागढ़ ईस्टेट से लगान से वसूले गये रूपये में से ₹30 दिया जाता राहा) निर्धारित कर श्री जगन्नाथ स्वामी मंदिर के पास एक मिट्टी का खपरैल मकान बना दिया जिसकी

लागत ₹500 थी। उस समय स्थिति अत्यंत विकट थी इसलिए ठाकुरानी बानेश्वरी कुवंर अपने पुत्र के अस्तित्व को लेकर अंग्रेजों द्वारा दी गई पेंशन और आवास की व्यवस्था को किसी तरह बर्दाशत कर लिया।[पअ] श्री जगन्नाथ मंदिर का पूजा व्यवस्था एवं अन्य व्यवस्था अमर शहीद के प्रत्यक्ष उत्तराधिकारी ही करते थे। जब ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव का परिवार छिन्न–बिन हो गया, तब अंग्रेजों ने मंदिर की देखभाल के लिए पुलिस बल के एक जवान गंगाराम तिवारी को नियुक्त कर दिया। गंगाराम तिवारी पूजन आदि का कार्य देखता था। श्री जगन्नाथ मंदिर में गंगा राम तिवारी की नियुक्ति के साथ ही उत्तराधिकारी का विवाद खड़ा हो गया क्योंकि परंपरा के अनुसार श्री मंदिर में पूजा का अधिकारी उत्कल ब्राह्मण ही हो सकता था। उपरांत ठाकुर कपिलनाथ शाहदेव ने श्री मंदिर की व्यवस्था में गड़बड़ी पर हस्तक्षेप किया। श्री जगन्नाथ मंदिर का प्रथम सेवक (सेवईत–राजसेवक) कौन हो, इस मुद्दे को लेकर वर्षों से विवाद चला लेकिन अंततः ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव के तत्कालीन प्रत्यक्ष उत्तराधिकारी ठाकुर देवेंद्र नाथ शाहदेव को वैधानिक रुप से श्री मंदिर का प्रथम सेवक (सेवईत–राजसेवक) घोषित किया गया।[अ] इसके उपरांत यह दायित्व का निर्वाहन पूर्ण निष्ठा के साथ ठाकुर बालेश्वरनाथ शाहदेव ने किया। वर्तमान में ठाकुर नवीननाथ शाहदेव प्रथम सेवक (सेवईत राजसेवक) जगन्नाथ मंदिर और प्रत्यक्ष उत्तराधिकारी अमर शहीद ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव द्वारा दायित्व का निर्वहन कीया जा रहा है। वर्तमान में भी संपूर्ण राज परिवार जगन्नाथ की सेवा में समर्पित है।

रथ यात्रा

बड़कागढ़ जगन्नाथ मंदिर रथ की छवि (पहले और अब)

बड़कागढ़. का जगन्नाथ मंदिर रथयात्रा के लिए अपनी एक अलग छवि का निर्माण करता है। आज वर्तमान में जहां आधुनिकीकरण के कारण मेलों की संख्या नाममात्र की रह गई है वहां जगन्नाथपुर का रथ मेला अपनी विशेष पहचान रखता है। जून–जुलाई में संपन्न होने वाली इस यात्रा में लाखों की संख्या में पर्यटकों का आगमन होता है। वृहद रूप से व्यापारी व्यापारिक कार्य संपन्न करते हैं। रथयात्रा के परंपरा के अनुसार प्रभु का नेत्रदान पूरे विधि–विधान के साथ संपन्न होता है। उससे पहले महाप्रभु अपने भाई बहनों के साथ महास्नान के बाद 15 दिनों तक एकांतवास मंदिर के गर्भ गृह में चले जाते हैं। 15 दिन के बाद जब प्रभु दर्शन देते हैं तो खुशियां देखते ही बनती है श्रद्धालु भाव विभोर हो जाते हैं। प्रभु के जयकारे में सैकड़ों हाथ खड़े हो जाते हैं चारों ओर घंट, शंख की ध्वनियां गुंजित होती है। इसके अगले दिन रथ यात्रा के साथ रथ मेला का शुभारंभ होता है। प्रभु जगन्नाथ की भव्य रथ यात्रा के लिए रथ का निर्माण रथयात्रा के पूर्व ही पूर्ण कर लिया जाता है। तत्पश्चात जगन्नाथ स्वामी बड़े भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा के साथ रथारूढ़ होकर मौसीबाड़ी जाते हैं। रथ को भक्तों द्वारा नारियल की रसियों के माध्यम से खींच कर पहुंचाया जाता है। लाखों की संख्या में श्रद्धालु इस कार्य हेतु उपस्थित होते हैं तथा भगवान जगन्नाथ का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। नौ दिनों तक गुंडीचा मंदिर में प्रभु अपने भाई बहन के साथ विराजते हैं। इन नौ दिनों में भव्य प्रकार से रथ मेला का आयोजन होता है। मेले में झारखंड के अलावा पड़ोसी राज्य बिहार, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, यू0पी0 से यहां आने वाले व्यवसाई दुकानदार अपनी दुकानें लगाते हैं। सैकड़ों स्टॉल लगते हैं, मांदर, ढोल, नगाड़ा, मछली जाल, बर्त्तन, मिठाइयां, विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थ, लोहे के सामान, तलवार, कटार, लकड़ी का सामान विभिन्न प्रकार के हस्त निर्मित वस्तुओं के दुकान, पारंपरिक हथियार जैसे तीर–धनुष, प्रदशर्नियां तथा झांकियां लगाई जाती है। सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होती है। झूले से लेकर अन्य मनोरंजन के साधन उपलब्ध होते हैं। बहुत ही व्यवस्थित ढंग से मेले को संपन्न कराया जाता है जिसमें प्रशासन की मुख्य भूमिका होती है।

गुंडिचा मंदिर (मौसीबाड़ी) में प्रभु की विधि–विधान के साथ पूजन होती है। दशमी के दिन भव्य पूजन के बाद प्रभु के प्रसाद के रूप में खीर खिचड़ी का वितरण होता है। हजारों की तादाद में भक्त पूजन तथा प्रसाद ग्रहण करने पहुंचते हैं। एकादशी को घूरती रथ यात्रा प्रारंभ होता है। पुनः चलती रथयात्रा की तरह ही लाखों भक्तों की भीड़ एकत्रित होती है। बहुत ही मनमोहक दृश्य होता है मानो आस्था का सैलाब उमड़ पड़ा हो। प्रभु को प्रमुख मंदिर ले जाया जाता है। सहस्त्रों प्रभु के नामों का जप किया जाता है। रथ मेले के समापन के साथ ही सभी प्रभु की जयकारा लगाते अपने घर तथा राज्य लौट जाते हैं।

सौहार्द और भाईचारे का प्रतीक है जगन्नाथ मंदिर

''पर्यटन विभिन्न देशों के अलग–अलग पृष्ठभूमि वाले लोगों को एक–दूसरे के निकट लाता है। इससे उनकी जीवन शैली के परस्पर ज्ञान अलग–अलग संस्थाओं से भली–भांति परिचित होने, पारस्परिक सहयोग बढ़ाने तथा सांस्कृतिक आदान–प्रदान का मौका मिलता है। इससे पर्यटकों के आगमन लोगों को संस्कृति आदान–प्रदान का अवसर मिलता है।[अप]जगन्नाथ मंदिर में विभिन्न बिरादरी के लोग बिना ऊंच–नीच का भेदभाव किए दर्शन को आते हैं। जिससे सामाजिक दूरी, भेद–भाव खत्म होती है तथा सौहार्द का अनूठा संगम प्रतीत होता है, नैतिकता का विकास होता है। जगन्नाथ मंदिर के प्रांगण में यू ंतो वर्ष भर पर्यटकों का जमावड़ा लगा रहता है परंतु कुछ विशेष अववसरों पर यह गुलजार प्रतीत होता है। जुन–जुलाई माह में रथ मेला का आयोजन तथा 25 दिसंबर को स्थापना दिवस मनाया जाता है। लाखों की संख्या में श्रद्धालु इस धार्मिक पर्यटन क्षेत्र का दौरा करते हैं। पूरे मंदिर परिसर में हवन–गान, भजन, सहस्त्रों नामों का जाप होता है मानो प्रकृति में श्रीहरि जगन्नाथ का आभास उत्पन्न हो विभिन्न परंपरा वाले लोग एक रंग में रंग जाते हैं। विभिन्न संस्कृति की झलक देखने को मिलती है। जो रीति–रिवाजों और परंपराओं, भाईचारे, सौहार्द का जीता जागता रूप प्रदर्शित करता है।

प्रभु को भोग

भगवान जगन्नाथ की रोजाना पूजन पूरी विधि विधान से संपन्न होती है प्रातः काल आरती होने के उपरांत महाप्रभु जगन्नाथ को बाल भोग के रूप में सूजी का हलवा और अन्य मिष्ठान चढ़ाया जाता है। दोपहर में दिन के 12:00 बजे अन्न भोग के रूप में दाल, चावल, सब्जी और खीर का भोग लगाया जाता है। सब्जी में मुख्य तौर पर कोहड़ा, शारु, गोगरा, बीन इत्यादि का भोग लगाया जाता है लहसुन, प्याज, आलू, टमाटर इत्यादि वर्जित है। दोपहर के भोग के उपरांत मंदिर 12:00 बजे बंद हो जाता है पुनः अपराहन् 3:00 बजे भगवान का पट खुलता है और आरती के बाद दर्शन लाभ भक्तों द्वारा पुनः प्राप्त किया जा सकता है। शाम 6:30 बजे संध्या आरती के उपरांत 7:30 बजे शयन आरती के पश्चात भोग के रूप में चावल की रोटी (छिलका) का भोग लगाया जाता है। भगवान का जगन्नाथ अष्टकम के द्वारा अस्तुति की जाती है पश्चात प्रातः काल तक भगवान का पट बंद हो जाता है।

विजय चिन्ह

1780 ई0 के युद्ध में मराठा सम्राट रघुजी भोसले को हराकर ठाकुर धीरजनाथ शाहदेव ने जो ऐतिहासिक धरोहर के रूप में एवं विजय चिन्ह के रूप में पांच नगाड़े जिसे रंजीता कहा जाता है ठाकुर निवास बड़कागढ़ जगन्नाथपुर में संरक्षित है तथा अष्ट धातु से निर्मित राधा कृष्ण की छः मूर्तियां जगन्नाथ मंदिर में स्थापित की गई है।

भारतीय संस्कृति तथा परंपरा

रथयात्रा में महिलाओं के लिए विग्रहों के स्पर्श दर्शन की व्यवस्था की जाती है पुजारियों के अनुसार रथारूढ़ विग्रहों के स्पर्श दर्शन केवल साड़ी पहन कर आई महिलाऐं ही कर सकती है। आज आधुनिक युग में भारतीय परंपरा की अनूठी मिसाल प्रदर्शित करती है। पुरुष वर्ग को भी आधुनिक परिधानों के जगह पारंपरिक परिधान धोती पहनना पड़ता है तभी वह प्रभु को स्पर्श कर पाते हैं। चमड़े से बने बेल्ट, जूते या अन्य किसी प्रकार की चमड़ा निर्मित वस्तुएं वर्जित है। हमारी विदेशी संस्कृति को अपनाना, कहीं ना कहीं हमारी अस्तित्व को धुमिल कर रही है वहीं जगन्नाथ प्रभु की महिमा इन परंपराओं को संयोजित किए हुए हैं। आधुनिकीकरण मन का हो संस्कृति, परंपरा, परिधान, संस्कार का नहीं।

अद्भुत दृश्य

मंदिर की भव्य आकृति, पर्यावरण की खूबसूरती से युक्त है। मन को मोहित करने वाले दृश्य एक अलग ही सुकून का आभास कराती है। रात्रि का दृश्य देखा जाए तो पूरी रांची जगमग दीप के समान प्रतीत होती है। पहाड़ी पर स्थित इस मंदिर से पूरी रांची का नजारा देखा जा सकता है। सफेद रंग से सुसज्जित यह मंदिर शांति का प्रतीक है। मंदिर के चारों ओर छोटे–छोटे कई मंदिर है जिसमें अन्य देवी–देवताओं की मूर्तियां तथा प्रभु जगन्नाथ के अवतार विराजमान है। मंदिर की कलाकृति देखते ही बनती है।

आर्थिक दृष्टि से जगन्नाथ मंदिर

झारखंड को मंदिरों की भूमि कहा जाना गलत नहीं होगा अक्सर धार्मिक पर्यटन क्षेत्रों को लोग आस्था के केंद्र के रूप में देखते हैं परंतु यह तो एक अंश मात्र है। वर्तमान समय में पर्यटक केवल धार्मिक आस्था के कारण इन मंदिरों का दौरा नहीं करते लोग पर्यटन की दृष्टि, मनोरंजन, जानकारी, शोध, अध्ययन के लिए भी विस्तृत रूप से इन क्षेत्रों का दौरा करते हैं। आज के समय में संसाधनों की कोई कमी नहीं है मनुष्य जैसे–जैसे विकास की ओर अग्रसर हो रहा है सभी बाधाओं को पार कर सुगम मार्ग बनाता जा रहा है। जगन्नाथ मंदिर की बात की जाए तो आज प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से यह रोजगार का सृजन कर रहा है "वैसे यह बात सत्य है कि पर्यटन का उद्देश्य तब तक पूर्ण नहीं होता जब तक इसके अपने तत्वों का सहयोग नहीं होता। यह

अन्य तत्व इस प्रकार है ठहराव, भोजन, सुरक्षा व्यवस्था, संचार साधन, ज्ञान और प्रचार के माध्यम, बैंक, सेवकों की सेवाएं, पर्यटन से जुड़े एजेंट और एजेंसियों का सहयोग आदि''[अपप] यह सभी तत्व पर्यटन को सफल बनाती है। आज जगन्नाथ मंदिर न केवल एक धार्मिक स्थल मात्र है बल्कि पर्यटन उद्योग भी है। आज प्रत्यक्ष रूप से यहां के पंडितों को रोजगार की प्राप्ति हो रही है वे प्रत्यक्ष रूप से इस धार्मिक पर्यटन स्थल पर जीवन यापन के लिए आश्रित है कई सेवक जो नित्य मंदिर परिसर में अपनी सहभागिता प्रदान करते हैं उन्हें भी इसका लाभ प्राप्त होता है। मंदिर के नीचे कई ऐसी दुकानें हैं जो प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से इस धार्मिक पर्यटन स्थल पर रोजगार के लिए निर्भर है। इसके अतिरिक्त कई अस्थाई पूजा सामग्री की दुकान लगाए जाते हैं। यातायात जैसे ऑटो चालकों को भी धार्मिक पर्यटन के अस्तित्व के कारण पर्यटकों को यातायात की सुविधा प्रदान कर बहुमूल्य आय की प्राप्ति होती है। इसके अलावा आज पर्यटकों की संख्या में काफी वृद्धि हुई है। विशेष दान, चन्दा के कारण भी मंदिर परिसर को आय की प्राप्ति होती है। कई प्रकार के कार्यक्रम मंदिर परिसर में आयोजित किए जाते हैं जिससे लाखों की संख्या में लोग दर्शन को आते हैं तथा अपनी बहुमूल्य आय का कुछ अंश यहां खर्च करते हैं। रोजगार के अवसरों का संपूर्ण विकास करने के लिए पर्यटकों की संख्या में वृद्धि करना आवश्यक है ताकि किसी समय विशेष पर ही पर्यटकों का आगमन ना होकर पूरे वर्ष भर यह दौर चलता रहे ताकि इन क्षेत्रों में जीवन यापन के लिए बसे लोगों को वर्ष भर आय की प्राप्ति हो जिसके लिए सौंदर्यीकरण के साथ, स्वच्छीकरण, प्रचार–प्रसार, टूर–पैकेज, बस सेवा, मनोरंजन कार्यक्रम इत्यादि का प्रबंध किया जाए। ताकि पर्यटकों का आगमन देश के विभिन्न भागों तक सीमित न रहकर विश्व के मानचित्र में भी अपना छाप बनाएं। झारखंड जैसे विरासत के धनी राज्य में धार्मिक पर्यटन एक विशेष महत्व रखती है। यहां पर्यटन की अथाह संभावनाएं हैं। रोजगार जैसी समस्याओं से निजात पाने के लिए पर्यटन एक विशेष विकल्प सिद्ध हो सकता है।

निष्कर्ष

जगन्नाथ मंदिर पर्यटन के व्यापक संभावनाओं का सृजन करता है। खुद प्रकृति ने इसका श्रृंगार किया है। सौंदर्य से लिप्त, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, पारंपरिक, रीति–रिवाज, सौंदर्य प्रेम का जीता जागता उदाहरण है। नई योजनाओं के तहत अगर इसके विकास, प्रदर्शन, प्रचार पर ध्यान दिया जाए तो एक समय पश्चात यहां विशेष मौकों पर नहीं वरन पूरे वर्षभर पर्यटकों का आगमन दिखेगा। आज बेरोजगारी जैसी समस्या के बीच में अगर पर्यटन क्षेत्र का संपूर्ण विकास कर इसे संपूर्ण विश्व में पहचान बना दी जाए तो यह उद्योग आय का एक ऐसा स्रोत प्रज्वलित करेगा कि जो आज तक अन्य उद्योग से संभव नहीं हो पाया है। एक जनजातीय प्रदेश होने के नाते झारखंड के हर क्षेत्र में प्रकृति और संस्कृति का विशेष महत्व है। यहां विभिन्न प्रकार के मेलों का आयोजन होता है। जहां बस उससे संबंधित लोग या परिचित क्षेत्र विशेष के लोग ही

भागीदारी सुनिश्चित करते हैं। अथाह संसाधनों के बाद भी इसका पूर्ण दोहन नहीं हो पाया है। राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मेलों एवं प्रदर्शनियों के माध्यम से तथा पर्यटन उद्योग के विकास में संगठनों एवं उनमें भागीदारी से भी महत्वपूर्ण विकास किया जा सकता है। ऐसे कार्यक्रमों में पर्यटन विभाग की भागीदारी सुनिश्चित होनी चाहिए। टूर पैकेज जैसे सुविधाओं के माध्यम से पर्यटकों को आकर्षित करना होगा ताकि झारखंड के धार्मिक पर्यटन के अस्तित्व, ऐतिहासिक धरोहर तथा सांस्कृतिक सौहार्द को पूरे विश्व के समक्ष प्रदर्शित किया जा सके। आज के औद्योगिक युग में अपने इतिहास, संस्कृति, परंपरा को संरक्षित करने की अत्यधिक आवश्यकता है।

संदर्भ :–

[i] अमर शहीद ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव, झारखंड के शहीदो का संक्षिप्त इतिहास पृ0सं0–84

[ii] उपरोक्त, पृ0सं0 85–86

[iii] उपरोक्त, पृ0सं0 85

[iv] उपरोक्त, पृ0सं0 91

[v] उपरोक्त, पृ0सं0 92

[vi] शिवस्वरूप सहाय, पर्यटन सिद्धांत और पर्यटन तथा भारत में पर्यटन, पृ0सं0–116

[vii] उपरोक्त, पृ0सं0 15